P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

राजस्थान में 15वीं विधानसभा के चुनाव 2018 : एक दृष्टि

अखय राज मीणा
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
झालावाड़, राजस्थान
भारत

सुनिल मीणा
सहायक आचार्य,
भौतिक शास्त्र विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बून्दी, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय संविधान द्वारा राज्य के दायित्वों के साथ साथ सरकार के स्वरूपों का भी निर्धारण किया गया है। हमारे यहाँ शासन प्रणाली के रूप में संघातक व्यवस्था के साथ संसदीय शासन प्रणाली को समन्वित किया गया है। चूँकि राजस्थान भारतीय संघ का सबसे बड़ा प्रान्त हैं, अतः यहाँ भी संसदीय शासन प्रणाली (मंत्रीमंडल शासन प्रणाली) प्रभावी है। यहाँ प्रत्येक पांच साल में राज्य विधानसभा के चुनाव होते है। इसी कड़ी में 7 दिसम्बर 2018 को राज्य में 15वीं विधानसभा के चुनाव हेतु मतदान हुआ। कुल 200 सीटों में से कांग्रेस गठबंधन को 101, भाजपा को 73 तथा अन्य को 26 सीटें मिली हैं। इन सीटों का वर्गवार, श्रेणीवार, क्षेत्रवार एवं अन्य पहलुओं की दृष्टि से भी इस आलेख में विश्लेषण किया गया हैं। 15वीं विधानसभा के चुनाव के लिए दोनां मुख्य दलों के चुनावी घोषणा–पत्रों तथा 15वीं विधानसभा के प्रमुख पदाधिकारियों का विवरण भी इस आलेख में है।

मुख्य शब्द : विधानसभा, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, विधानसभा क्षेत्र, मतदान केन्द्र, मतदाता, चुनाव, प्रत्याशी, राजनीतिक दल, पीवीसी वोटर आई डी, वीवीपैट, नोटा, स्पीकर, प्रोटेम स्पीकर, सचेतक, नेता प्रतिपक्ष।

प्रस्तावना

राजस्थान में सभी 200 सीटों पर 15वीं विधानसभा के लिए 7 दिसम्बर, 2018 को प्रथम चरण में चुनाव संपन्न हुए।[1]

विधानसभा क्षेत्र

राजस्थान में कुल 200 विधानसभा क्षेत्र हैं। इन 200 सीटों में से 34 सीटें अनुसूचित जाति (एस.सी.) के लिए तथा 25 सीटें अनुसूचित जनजाति (एस. टी.) के लिए आरक्षित हैं।[2] इनके आलावा शेष 141 सीटें सामान्य हैं जो सभी वर्गों के लिए खुली हुई हैं। सामान्य सीटों पर अजा, अजजा, ब्राह्मण, मुस्लिम, महिला या कोई और चुनाव लड़ सकता है।

सबसे बड़ा

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे बड़ा विधानसभा क्षेत्र जैसलमेर है, जो 28874 वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है।[3]

सबसे छोटा

क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान का सबसे छोटा विधानसभा क्षेत्र किशनपोल (जयपुर) है, जो मात्र 5.7 वर्ग किमी. क्षेत्र में है।[4]

15वीं विधानसभा चुनाव : मतदान केन्द्र

प्रदेश में 15वीं विधानसभा के चुनाव के लिए कुल 51687 मतदान केन्द्र बनाये गये।[5] इनमें से 209 आदर्श मतदान केन्द्र तथा 259 पिंक मतदान केन्द्र बनाए गए। राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी आनन्द कुमार के अनुसार राज्य के कुल 51687 मतदान केन्द्रों में से 13382 संवेदनशील माने गये, जिनमें से 4982 पर माइक्रो ऑब्जर्वर, 3948 पर वीडियोग्राफर, 3138 पर वेबकास्टिंग और 7791 पर केन्द्रीय सुरक्षा बल (CRPF) की तैनाती की गई।[6]

15वीं विधानसभा : राजस्थान में मतदाता

प्रदेश में 28 सितम्बर 2018 की मतदाता सूचियों का अंतिम प्रकाशन किया गया। इसके अनुसार प्रदेश में वर्ष 2018 में 15वीं विधानसभा के चुनाव के समय कुल मतदाता 4 करोड़ 74 लाख 79 हजार 402 थे।[7] इनमें से पुरूष मतदाताओं की संख्या 2 करोड़ 47 लाख 60 हजार 755 है, जबकि महिला मतदाता 2 करोड़ 27 लाख 18 हजार 647 ही है। पुरूषों की तुलना में 20 लाख 42 हजार 105 महिला मतदाता कम हैं। इस लिहाज से 1000 पुरूषों की तुलना में महिला वोटर की संख्या 918 है।[8] गत 46 साल में 1000 पुरूषों पर महिला वोटरों की संख्या में 195 वोटरों की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है।[9] अब 1000 पुरूषों की तुलना में 82 महिला मतदाता कम हैं।[10]

चुनावी वर्ष	1000 पुरूष वोटरों पर महिला वोटरों की संख्या
1972	723
1977	763
1980	744
1985	728
1990	736
1993	755
1998	786
2003	841
2008	874
2013	899

15वीं विधानसभा के चुनाव

2018 के समय प्रदेश में 20 लाख नए मतदाता थे।[11] प्रदेश में 2018 के चुनाव के समय सर्वाधिक मतदाता जयपुर जिले में तथा सबसे कम मतदाता जैसलमेर जिले में हैं।[12]

संभागवार मतदाता

क्र.सं.	संभाग	विधानसभा सीटें	मतदाता
1	जयपुर	50	11695649
2	अजमेर	29	6898844
3	कोटा	17	3986425
4	उदयपुर	28	6734272
5	भरतपुर	19	4376427
6	बीकानेर	24	5630002
7	जोधपुर	33	8147794

15वीं विधानसभा : प्रत्याशी

15वीं विधानसभा के लिए राज्य की 200 सीटों के लिए 88 दलों के 2294 उम्मीदवारों ने ताल ठोकी।[13]

सर्वाधिक प्रत्याशी

किशनपोल विधानसभा क्षेत्र से सर्वाधिक 71 प्रत्याशी चुनावी मैदान में थे। इनमें से 187 महिलाएं थीं।

सबसे कम प्रत्याशी

जालोर, हिण्डौन सिटी व सिकराय विधानसभा क्षेत्रों से सबसे कम 4–4 प्रत्याशी चुनावी मैदान में थे।[14]

15वीं विधानसभा में राजनीतिक दल व उनका प्रदर्शन

राजस्थान की राजनीति में सरकार के गठन के संदर्भ में खो–खो के नियम प्रभावी होते दिख रहे हैं। खो–खो में खिलाड़ी बारी–बारी से अपनी जगह बदलते हैं। यही इस खेल का नियम है। राजस्थान की सियासत विगत 20 सालों से इसी नियम पर चल रही है। राज्य में हर पाँच साल में मतदाता सरकारों की जगह बदल देता है। सियासत की दृष्टि से बेहद विचित्र और विकट इस राज्य में जनता ने इस बार कांग्रेस को चुना है तथा भाजपा को नकार दिया है। जनमत ने अगले 5 सालों के लिए सियासत का अपना नया स्वप्नलोक बुन लिया है।[15] राजस्थान में लगातार 5 वीं बार सरकार बदली है।

राजस्थान : कब किस पार्टी की सरकार[16]

क्र. सं.	सरकार गठन का वर्ष	सरकार गठन
1	1998	कांग्रेस को 153 सीटें मिलीं। अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बने।
2	2003	भाजपा को 120 सीटें मिलीं। वसुन्धरा राजे सिन्धिया मुख्यमंत्री बनीं।
3	2008	कांग्रेस को 96 सीटें मिलीं। अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बने।
4	2013	भाजपा को 163 सीटें मिलीं। वसुन्धरा राजे सिन्धिया मुख्यमंत्री बनीं।
5	2018	कांग्रेस को 100 सीटें मिलीं। अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बने।

राजस्थान की 15वीं विधानसभा के चुनाव 2018 में 88 राजनीतिक दलों तथा 840 निर्दलीय उम्मीदवारों ने अपना भाग्य आजमाया।[17] इन दलों में 6 राष्ट्रीय राजनीतिक दल, 07 राज्य राजनीतिक दल तथा 75 रजिस्टर्ड गैर मान्यता प्राप्त दल थे। जबकि 2013 में 14 वीं विधानसभा के चुनाव में 56 राजनीतिक दल दौड़ में थे, जिनमें 06 राष्ट्रीय राजनीतिक दल, 10 राज्य राजनीतिक दल तथा 40 रजिस्टर्ड गैर मान्यता प्राप्त दल थे।[18] इस प्रकार 2018 में 2013 की तुलना में चुनाव लड़ने वाले दलों की संख्या 54% बढ़ी है।[19] 15वीं विधानसभा में भाजपा ने 200, कांग्रेस ने 195, बसपा ने 190 तथा आप ने 142 लोगों को टिकट दिया।[20] 15वीं विधानसभा के लिए कम से कम 20 दलों ने एक–एक प्रत्याशी मैदान में उतारा, जबकि 15 दलों ने दो–दो सीटों पर और 34 दल ऐसे थे, जिन्होंने तीन से लेकर 20 लोगों को चुनावी दंगल में भेजा था।[21]

15वीं विधानसभा के चुनाव में कांग्रेस को 100 सीटों पर, भाजपा को 73 सीटों पर तथा अन्य को 27 सीटों पर जीत हासिल हुई है।[22] जबकि 14वीं विधानसभा के चुनाव 2013 में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) 163 सीटों के साथ सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी और वसुन्धरा राजे सिन्धिया सीएम बनीं।[23] 2013 के चुनाव में कांग्रेस के पास महज़ 21 सीटें ही बची थीं। इसके अलावा बसपा को 03, नेशनल पीपुल्स पार्टी (राजपा) को 04, नेशनल यूनियनिस्ट जमींदारा पार्टी (एनयूजेडपी) को 02 तथा अन्य को 07 सीटों पर जीत मिली थी।[24]

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दलीय स्थिति 2018 V/o 2013					
2018 में दलीय स्थिति			2013 में दलीय स्थिति		
क्र. स.	दल	सीट	क्र. स.	दल	सीट
1	कांग्रेस (INC)	100	1	भाजपा (BJP)	163
2	भाजपा (BJP)	73	2	कांग्रेस (INC)	21
3	बसपा (BSP)	06	3	राजपा (NPP)	04
4	रालोपा (RLTP)	03	4	बसपा (BSP)	03
5	माकपा (CPM)	02	5	नेयूजपा (एनयूज़ेडपी)	02
6	रालोदा (RLD)	01	6	अन्य	07
7	निर्दलीय	13		-	-
कुल सीटें		200	कुल सीटें		200

31 जनवरी,2019 को अलवर की रामगढ़ सीट के परिणाम के बाद राजस्थान की

15वीं विधानसभा में दलीय स्थिति इस प्रकार है[25] –

क्र.सं.	पार्टी	प्राप्त सीटें
1.	कांग्रेस (INC)	100 (+79)
2.	भाजपा (BJP)	(–90)
3.	बसपा (BSP)	06
4.	रालोपा (RLTP)	03
5.	माकपा (CPM)	02
6.	भाट्रापा (BTP)	02
7.	रालोद (RLD)	01
8.	निर्दलीय	13
कुल विधानसभा सीटें		200

15वीं विधानसभा के चुनाव में वोट शेयर इस प्रकार रहा है[26] –

2018	2013
भाजपा – 38.8% (- 6.7%)	भाजपा – 45.2
कांग्रेस – 39.3% (5.89%)	कांग्रेस – 33.1
अन्य – 21.9% (- 6.7%)	अन्य – 13.5
IND – 9.5%	IND – 8.2%

इस प्रकार 7 दिसम्बर, 2018 को हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को 39.3 फीसदी मत मिले हैं जो पिछली बार से 5.89 फीसदी अधिक हैं, वहीं भाजपा को 38.8 फीसदी मत मिले हैं जो भाजपा के वोट में 6.7 फीसदी की गिरावट दर्शाता है।

15वीं विधानसभा में दलीय वोट शेयर [27]			
क्र. स.	राजनीनिक दल	वोट शेयर % में	प्राप्त वोट
1	INC	39.3%	139352
2	BJP	38.8%	137575
3	IND	9.5%	3372206
4	BSP	4.0%	1410995
5	RLTP	2.4%	856038
6	CPM	1.2%	434210
7	BTP	0.7%	255100
8	AAP	0.4%	135816
9	RLD	0.3%	116320
10	BVHP	0.3%	111357
11	JSR	0.2%	73015
12	NCP	0.2%	68051
13	SP	0.2%	65160
14	नोटा	1.3%	467781
IND -Independent (निर्दलीय)			

15वीं विधानसभा के चुनाव में भाजपा 163 से गिरकर 73 पर आ टिकी है। इस चुनाव में उसके 20 मंत्री तथा 67 विधायक चुनाव हारे हैं। मतगणना के बाद 11 दिसम्बर, 2018 को रात आठ बजे के करीब मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे सिन्धिया ने राज्यपाल कल्याण सिंह को अपना इस्तीफा सौंप दिया।[28] भाजपा सरकार के जो आठ मंत्री चुनाव जीते हैं, उनमें से भी 5 का जीत का अन्तर काफी घट गया है। चुनाव जीतने वाले भाजपा सरकार के मंत्री निम्न हैं[29] –

क्र.सं.	नाम	विधानसभा क्षेत्र	मंत्रालय
1	वसुन्धरा राजे	झालरापाटन	मुख्यमंत्री
2	गुलाबचन्द कटारिया	उदयपुर नगर	गृहमंत्री
3	राजेन्द्र राठौड़	चूरू	पंचायतीराज
4	वासुदेव देवनानी	अजमेर नॉर्थ	शिक्षा
5	अनिता भदेल	अजमेर साउथ	महिला एवं बाल विकास
6	कालीचरण सर्राफ	मालवीय नगर	स्वास्थ्य (पहले शिक्षा)
7	किरण माहेष्वरी	राजसमंद	उच्च शिक्षा
8	पुष्पेन्द्र सिंह	बाली	ऊर्जा राज्यमंत्री

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-1) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

15वीं विधानसभा : संभागवार विधायक : अलवर जिले की रामगढ़ सीट के परिणाम (31 जनवरी, 2019) के बाद की स्थिति

क्र.सं.	संभाग	संभाग विधानसभा सीटें	कांग्रेसी विधायकों की संख्या	भाजपाई विधायकों की संख्या	अन्य विधायकों की संख्या
1	**जयपुर**	50	29	10	11
2	**जोधपुर**	33	16	14	03
3	**उदयपुर**	28	10	15	03
4	**अजमेर**	29	13	13	03
5	**बीकानेर**	24	11	10	03
6	**भरतपुर**	19	14	01	04
7	**कोटा**	17	07	10	00
कुल योग		**200**	**100**	**73**	**27**

भाजपा सरकार के 13 कैबिनेट और 03 राज्यमंत्री चुनाव हार गये। हारने वाले मंत्री इस प्रकार हैं –

क्र.स.	कैबिनेट मंत्री	मंत्रालय	विधानसभा क्षेत्र	किससे हारे
1	अरूण चतुर्वेदी	सामाजिक न्याय	जयपुर –सिविल लाइन	प्रताप सिंह खाचरियावास INC
2	राजपाल सिंह	उद्योग	जयपुर –झोटवाड़ा	लालचंद कटारिया (कांग्रेस)
3	प्रभुलाल सैनी	कृषि	अंता	प्रमोद जैन भाया (कांग्रेस)
4	यूनुस खान	परिवहन	टोंक	सचिन पायलट (कांग्रेस)
5	अजय सिंह	सहकारिता	डेगाना	विजय पाल मिर्धा (कांग्रेस)
6	सुरेन्द्र पाल	खान मंत्री	श्रीकरणपुर	गुरमीत सिंह (कांग्रेस)
7	राम प्रताप	जल संसाधन	हनुमानगढ़	विनोद कुमार (कांग्रेस)
8	गजेन्द्र सिंह	वन मंत्री	लोहावट	किशनाराम विश्नोई (कांग्रेस)
9	श्रीचंद कृपलानी	यूडीएच	निंबाहेड़ा	उदयलाल आंजना (कांग्रेस)
10	बाबूलाल वर्मा	खाद्य	बारॉ –अटरू	पाना चन्द (कांग्रेस)
11	अमराराम	राजस्व	पचपदरा	मदन प्रजापत (कांग्रेस)
12	कृष्णेन्द्र कौर	पर्यटन	नदबई	जोगिन्दर सिंह (बसपा)
13	ओटाराम देवासी	गोपालन	सिरोही	संयम लोढ़ा (निर्दलीय)
क्र.स.	**राज्य मंत्री**	**मंत्रालय**	**विधानसभा क्षेत्र**	**किससे हारे**
1	सुशील कटारा	जलदाय	चौरासी	राजकुमार रोत (बीटीपी)
2	बंशीधर बाजिया	स्वास्थ्य	खंडेला	महादेव सिंह (निर्दलीय)
3	कमसा मेघवाल	जनजातीय	भोपालगढ़	पुखराज (RTLP)

भाजपा सरकार के 4 मंत्री टिकट न मिलने पर बागी होकर मैदान में उतरे थे। इनमें 03 कैबिनेट व एक राज्यमंत्री था, चारों चुनाव हारे। ये हैं [30] –

क्र.स.	कैबिनेट मंत्री	मंत्रालय	विधानसभा क्षेत्र	किससे हारे
1	राजकुमार रिणवा	देवस्थान	रतनगढ़	भाजपा के अभिनेष से
2	सुरेन्द्र गोयल	पीएचईडी	जैतारण	भाजपा के अविनाष से
3	हेमसिंह भड़ाना	सामान्य प्रशासन	थानागाजी	निर्दलीय काँति से
4	धनसिंह रावत (राज्य मंत्री)	पंचायतीराज	बांसवाड़ा	कांग्रेस के अर्जुन से

15वीं विधानसभा : राजस्थान के छह बड़े शहरों में दलीय स्थिति –

क्र.स.	शहर का नाम	कुल विस. सीटें	भाजपा	भाजपा का नुकसान	कांग्रेस	कांग्रेस का नफा/ नुकसान
1	जयपुर	19	06	-10	10	+09
2	जोधपुर	10	02	-07	07	+06
3	कोटा	06	03	-03	03	+03
4	उदयपुर	08	06	-00	02	+01
5	बीकानेर	07	03	-01	03	+01
6	अजमेर	08	05	-03	02	+02
कुल सीटें		**58**	**25**	**- 24**	**27**	**+22**
स्रोत – दैनिक भास्कर, कोटा, 12 दिसम्बर, 2018 : साभार						

इस चुनाव में कांग्रेस के 21 में से 7 विधायक हारे हैं।

नये राजनीतिक दल

क्र. सं	राजनीतिक दल	संस्थापक	चुनाव चिन्ह्
1.	भारत वाहिनी पार्टी, जयपुर	घनश्याम तिवाड़ी (2018)	बांसुरी
2.	सर्व शक्ति दल, जयपुर	सुरेन्द्र सिंह 2008	
3	भारतीय जन सत्ता पार्टी, सीकर	प्रेमचन्द (2018)	
4	अभिनव राजस्थान पार्टी, नागौर		
5	पंच पार्टी, करौली		
6	राजस्थान जनता पार्टी, अलवर		जूता
7	खुशहाल किसान पार्टी, भरतपुर		
8	आरक्षण विरोध पार्टी		
9	राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (RLTP)	हनुमान बेनीवाल (2018)	पानी की बोतल
10	भारतीय ट्राइबल पार्टी (BTP)	छोटूभाई अमरसिंह भाई वसावा (2017 में गुजरात में)	टेम्पो ऑटो रिक्षा
11	जनता सेना राजस्थान (JSR)	रणधीर सिंह भींडर (2018)	कड़ाही

स्रोत – पारूल कुलश्रेष्ठ, राजस्थान असेम्बली इलेक्शन 2018 : यूनिक नेम्स ऑफ पॉलिटिकल पार्टीज एड स्पाइस टू पोल्स, टाइम्स ऑफ इण्डिया डॉट कॉम, नवम्बर 23, 2018. तथा दैनिक भास्कर, जयपुर, 3 अक्टूबर, 2018.

15वीं विधानसभा में नए राजनीतिक दल

राजस्थान में इस बार 51 नए राजनीतिक दलों ने चुनाव लड़ा। इनमें से सिर्फ दो राजनीतिक दलों के उम्मीदवार चुनाव जीत पाए हैं। ये हैं – (1) राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (रालोप), तथा (2) भारतीय ट्राइबल पार्टी (बीटीपी)।[31] राष्ट्रीय लोकतांतित्रक पार्टी (RLTP) हुनमान बेनीवाल की रालोपा ने 19 जिलों की 58 सीटों पर चुनाव लड़ा। इसने तीन सीटें जीती हैं।[32] 29 अक्टूबर, 2018 को जयपुर के मानसरोवर के वीटी रोड स्थित मैदान में हनुमान बेनीवाल ने 'राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी' (RLP) के गठन की घोषणा की।[33] नई पार्टी के गठन के मौके पर बेनीवाल के साथ भारत वाहिनी पार्टी, समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल खड़े नजर आए।[34] रालोपा ने हालांकि 03सीटें ही जीती हैं, परन्तु उसने जाट बहुल 38 निर्वाचन क्षेत्रों के चुनाव परिणामों को प्रभावित किया हैं। इनमें से अधिकांश निर्वाचन क्षेत्रों में कांग्रेस के उम्मीदवार हार गए हैं।[35]

भारतीय ट्राइबल पार्टी (BTP)

भारतीय ट्राइबल पार्टी ने 6 जिलों की 11 सीटों पर चुनाव लड़ा और डूँगरपुर जिले की दो सीटों पर शानदार जीत दर्ज की। पहली बार चुनाव लड़ी बीटीपी ने चौरासी और सागवाड़ा –दो सीटों पर जीत दर्ज की। आसपुर में बीटीपी का प्रत्याशी दूसरे स्थान पर रहा।[36] बीटीपी गुजरात बेस्ड पार्टी है जिसकी स्थापना 2017 में गुजरात और राजस्थान के आदिवासियों के हितों की रक्षा के लिए हुई थी।[37] बीटीपी का मुख्य उद्देश्य इन दो राज्यों की आदिवासी आबादी (Trabal Population) के लिए पृथक् होमलैण्ड की प्राप्ति है।[38] बीटीपी यूपीए गठबंधन का भाग है तथा इसने राजस्थान में कांग्रेस को समर्थन दिया है।[39] बीटीपी की स्थापना छोटूभाई अमर सिंह भाई वसावा ने जनता दल छोड़ने के बाद 2017 में की थी। बीटीपी की सामाजिक इकाई 'भील ऑटोनोमस कौंसिल' (बीएसी) है तथा बीएसी की विद्यार्थी विंग 'भील प्रदेश विद्यार्थी मोर्चा' है। बीएसी ने वांगड़ अंचल में 'आदिवासी परिवार चिंतन शिविर' आयोजित किए। इसकी विद्यार्थी विंग डूंगरपुर जिले के तीन महाविद्यालयों में छात्रसंघ चुनाव – 2018 में जीत दर्ज कराने में सफल रही। इनमें से एक तो वसुन्धरा सरकार में राज्यमंत्री सुशील कटारा के गृहक्षेत्र चौरासी विधानसभा क्षेत्र के पीठ स्थित संस्कृत महाविद्यालय है।[40] चौरासी विधानसभा क्षेत्र से बीटीपी के युवा चेहरे 26 वर्षीय राजकुमार रोत ने सुषील कटारा को 12 हजार से अधिक मतों से शिकस्त दी।[41] सागवाड़ा विधानसभा क्षेत्र से बीटीपी प्रत्याशी रामप्रसाद डेण्डोर ने भाजपा के शंकर लाल डेचा को साढ़े चार हजार मतों से हराया।[42]

इन चुनावों में 02 नए दल सिर्फ वोट काटने वाले साबित हुए। ये नए दल हैं – (1) भारत वाहिनी पार्टी (बीवीपी) तथा (2) जनता सेना राजस्थान (जेएसआर)।[43] घनश्याम तिवाड़ी की बीवीपी ने 26 जिलों की 62 सीटों पर अपने उम्मीदवार खड़े किए थे, पर एक भी नहीं जीता। खुद तिवाड़ी की जमानत जब्त हो गई।[44] वल्लभ नगर से निर्दलीय विधायक रणधीर सिंह भींडर ने जनता सेना राजस्थान (जेएसआर) नामक पार्टी बनाई। जेएसआर ने 03 जिलों की 09 सीटों पर चुनाव लड़ा, पर कोई प्रत्याशी चुनाव नहीं जीता। खुद भींडर हार गए।[45]

15वीं विधानसभा : रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में चुनाव

अलवर जिले के रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के लिए 28 जनवरी, 2019 को मतदान हुआ। यहाँ मुख्य मुकाबला भारतीय जनता पार्टी, बहुजन समाज पार्टी व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बीच था।[46] इन तीनों दलों के उम्मीदवार इस प्रकार हैं[47] –

1. जगतसिंह (बसपा) – ये पूर्व विदेश मंत्री नटवर सिंह के पुत्र हैं।
2. साफिया जुबेर खान (कांग्रेस)।
3. सुखवंत सिंह (भाजपा) – इन्हें भाजपा ने निवर्तमान एमएलए ज्ञानदेव आहूजा के स्थान पर मैदान में उतारा है।

रामगढ़ सीट पर चुनाव के लिए 278 मतदान केन्द्र बनाए गए। यहां कुल 2.35 लाख मतदाता हैं। इनमें से 79% लोगों ने मतदान किया।[48] रामगढ़ सीट पर

बसपा प्रत्याशी लक्ष्मण सिंह का 29 नवम्बर 2018 को निधन हो गया, जिससे यहाँ 07 दिसम्बर, 2018 को मतदान नहीं कराया जा सका।[49] रामगढ़ सीट पर चुनाव का परिणाम 31 जनवरी, 2019 को आया जिसमें कांग्रेस प्रत्याशी साफिया जुबेर खान ने 12228 मतों से जीत दर्ज करायी। कांग्रेसी प्रत्याशी साफिया ने 83311 मत प्राप्त किये, जबकि दूसरे नम्बर पर रहे भाजपा उम्मीदवार सुखवंत सिंह को 71083 मत मिले।[50] साफिया को 44.77% वोट मिले हैं जबकि सुखवंत को 38.20% वोट मिले हैं।[51] रामगढ़ सीट पर 20 प्रत्याशी दौड़ में थे, जिनमें से साफिया व सुखवंत को छोड़कर शेष सभी 18 प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गयी है।[52] इस सीट पर जीत से कांग्रेसी गठबन्धन को 200 सदस्यीय सदन में स्पष्ट बहुमत (Vote of Confidence) मिल गया है। अब सदन में कांग्रेसी गठबन्धन की 101 सीटें (कांग्रेस की 100+ रालोद की 01 सीट) हो गई हैं।[53]

15वीं विधानसभा : चुनावी नवाचार

राज इलेक्शन एप

निर्वाचन विभाग द्वारा 8 अक्टूम्बर, 2018 को 'राज इलेक्शन' नामक एंड्रॉयड एप लॉन्च किया गया। इस एप के माध्यम से मतदाता को भाग संख्या, क्रम संख्या व मतदान केन्द्र की जानकारी उपलब्ध करायी गयी[54]

सी – विजिल एप

राजस्थान विधानसभा चुनाव के सन्दर्भ में निर्वाचन विभाग द्वारा 'सीविजिल एप' जारी किया गया। इस एप के द्वारा आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत जनता सीधे चुनाव आयोग को कर सकती है। किसी भी शिकायत का समाधान आयोग 100 मिनट में करता है।[55]

पिंक पोलिंग बूथ

यह ऐसा पोलिंग बूथ है जहां मतदान का समस्त कार्य महिलाएँ ही करवाती हैं।[56] इन केन्द्रों पर पीठासीन अधिकारी से लेकर कर्मचारी व सुरक्षा प्रहरी तक सभी जिम्मेदारियाँ महिलाएँ ही निभाती हैं।[57] चुनाव आयोग ने राजस्थान के 199 विधानसभा क्षेत्रों में 259 पोलिंग बूथों को 'पिंक बूथ' घोषित किया। चुनाव आयोग ने यह नवाचार मध्य प्रदेश तथा मेघालय में भी किया है।[58]

फोटो युक्त वैलेट युनिट

राजस्थान विधानसभा के चुनाव में पहली बार फोटो युक्त वैलेट युनिट का इस्तेमाल हुआ है। ईवीएम में लगने वाली वैलेट युनिट में अब प्रत्याशी के नाम व चुनाव चिह्न के साथ उसका फोटो भी दिया जाने लगा है। अजमेर लोकसभा चुनाव में इस फोटो युक्त वैलेट युनिट का परीक्षणात्मक तौर पर प्रयोग हुआ था। फोटो युक्त वैलेट युनिट से मतदाता को प्रत्याशियों को पहचानने में आसानी होगी। इससे समान नाम वाले डमी प्रत्याशी उतारने जैसी दुष्प्रवृत्ति रूकेगी।[59]

पीवीसी वोटर आईडी

चुनाव आयोग ने राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018 के लिए पहली बार पीवीसी वोटर आई–कार्ड जारी किए, जिनमें मतदाता का कलर फोटो है। पीवीसी वोटर आई–कार्ड ठीक एटीएम जैसे होते हैं।[60]

वीवीपैट (वोटर पेपर ऑडिट ट्रेल)

ईवीएम से वोट डालने के तुरन्त बाद एक पर्ची निकलती है जिससे यह पता चलता है कि मतदाता का वोट किस उम्मीदवार को गया है। पर्ची पर उस उम्मीदवार का नाम व चुनाव चिह्न छपा होता है। ईवीएम में लगे शीशे के एक स्क्रीन पर यह पर्ची सात सेकंड तक दिखती है।[61] भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड (BEL) और इलेक्ट्रॉनिक कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड (ECIL) ने यह मशीन 2013 में डिज़ायन की थी। सबसे पहले इसका इस्तेमाल नागालैण्ड के चुनाव में 2013 में हुआ। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने केन्द्र सरकार को वीवीपैट मशीन बनाने और इसके लिए पैसे मुहैया कराने के आदेश दिए। 2017 के गोवा चुनाव में भी वीवीपैट का इस्तेमाल किया गया। 7 दिसम्बर 2018 के राजस्थान विधानसभा चुनाव समेत 5 राज्यों के विधानसभा चुनाव (राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना, व मिजोरम) में वीवीपैट का इस्तेमाल किया गया।[62]

15वीं विधानसभा चुनाव : मतदान प्रतिशत

15वीं विधानसभा के चुनाव में 2018 में 74.6 फीसदी मतदान हुआ, जबकि 2013 में यह 75.7 फीसदी रहा।[63] इस प्रकार मतदान प्रतिशत में 1.1 फीसदी की गिरावट आयी है।

पुरूष मतदान – 73.80% (1.82 करोड़ से ज्यादा)

महिला मतदान – 74.66% (1.69 करोड़)

इस बार महिलाओं ने पुरूषों के मुकाबले 0.86 फीसदी ज्यादा मतदान किया है जबकि 2013 के विधानसभा चुनाव में महिलाओं ने पुरूष मतदाताओं की तुलना में 0.65 फीसदी ज्यादा मतदान किया था। पिछले चुनाव में प्रदेश के इतिहास में पहली बार महिलाओं ने मतदान में पुरूषों को पछाड़ा था।[64]

नोटा (NOTA)

भारतीय चुनाव आयोग (ECI) ने 2013 में मतदाताओं को अपने निर्वाचन क्षेत्र के सभी उम्मीदवारों को नकारने के लिए नोटा का विकल्प दिया था। 2018 के राजस्थान विधानसभा चुनाव में 467781 मतदाताओं ने नोटा को चुना है।[65] इस चुनाव में नोटा को 1.3 प्रतिशत मत प्राप्त हुए हैं।[66] यदि देखा जाए तो प्राप्त मतों की दृष्टि से नोटा प्रदेश में कांग्रेस, भाजपा, निर्दलीय, बसपा तथा रालोप के बाद छठी शक्ति बनकर उभरा है।

15वीं विधानसभा चुनाव : जीत का सबसे बड़ा व छोटा अन्तर

15वीं विधानसभा की सबसे बड़ी और सबसे छोटी जीत का रिकॉर्ड भीलवाड़ा जिले में बना है और दोनों जगह भाजपा प्रत्याशी जीते हैं।

सबसे बड़ी जीत

भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी कैलाश मेघवाल को प्रदेश की सबसे बड़ी जीत मिली। उन्होंने अनुसूचित जाति के लिए सुरक्षित इस सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी महावीर प्रसाद को 74542 मतों के अन्तर से हराया। कैलाश चन्द मेघवाल 15वीं विधानसभा के सबसे बुजुर्ग विधायक (84 वर्ष) भी हैं।[67] मेघवाल 14वीं विधानसभा के अध्यक्ष रहे हैं। श्री मेघवाल

साल 1977 में पहली बार विधायक चुने गए। वे टोंक–सवाई माधोपुर सीट से सांसद भी रहे।

सबसे छोटी जीत

भीलवाड़ा जिले के आसींद विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याक्षी जब्बर सिंह सांखला को प्रदेश में सबसे छोटी जीत मिली है। उन्होंने इस सामान्य सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी मनीष मेवाड़ा को महज 154 मतों से हराया है।[68]

राजस्थान की 34 सीटें अनुसूचित जाति (SC) के लिए आरक्षित हैं। इन सीटों में से भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) ने 19, भारतीय जनता पार्टी (BJP) ने 12, राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पाटी (RLTP) ने 02 तथा निर्दलीयों ने 01 सीट जीता है। खास बात यह है कि बसपा स्वयं को दलितों की पैरोकार मानती है, लेकिन वह एससी के लिए रिजर्व सीटों में से एक भी सीट को अपने खाते में दर्ज नहीं करा पायी है। बसपा द्वारा जीती गई सभी 06 सीटें सामान्य हैं।

15वीं विधानसभा चुनाव : अजा रिजर्व सीटें

क्र.स.	सीट–एससी	विजयी प्रत्याशी	राजनीतिक दल
1	पीलीबंगा (हनुमानगढ़)	धर्मेन्द्र कुमार	भाजपा
2	खाजूवाला (बीकानेर)	गोविन्द राम	कांग्रेस
3	सुजानगढ़ (चुरू)	मास्टर भंवरलाल मेघवाल	कांग्रेस
4	धोद (सीकर)	परसराम मोरदिया	कांग्रेस
5	चाकसू (जयपुर)	वेदप्रकाश सोलंकी	कांग्रेस
6	अलवर ग्रामीण (अलवर)	टीकाराम जुली	कांग्रेस
7	कठूमर (अलवर)	बाबू लाल	कांग्रेस
8	बसेड़ी (धौलपुर)	खिलाड़ी लाल बैरवा	कांग्रेस
9	हिंडौन सिटी (करौली)	भरोसी लाल जाटव	कांग्रेस
10	सिकराय (दौसा)	ममता भूपेश	कांग्रेस
11	खण्डार (सवाई माधोपुर)	अशोक बैरवा	कांग्रेस
12	निवाई (टोंक)	प्रशांत बैरवा	कांग्रेस
13	जायल (नागौर)	मंजू देवी	कांग्रेस
14	बिलाड़ा (जोधपुर)	हीराराम	कांग्रेस
15	चौहटन (बाड़मेर)	पदमाराम	कांग्रेस
16	बारां –अटरू (बारां)	पानाचंद मेघवाल	कांग्रेस
17	बयाना (भरतपुर)	अमरसिंह	कांग्रेस
18	रायसिंह नगर (गंगानगर)	बलवीर सिंह लूथरा	भाजपा
19	अनूपगढ (गंगानगर)	संतोष	भाजपा
20	पिलानी (झुंझुनू)	जे.पी.चन्देलिया	कांग्रेस
21	बगरू (जयपुर)	गंगा देवी	कांग्रेस
22	वैर (भरतपुर)	भजनलाल जाटव	कांग्रेस
23	अजमेर दक्षिण (अजमेर)	अनिता भदेल	भाजपा
24	सोजत (पाली)	शोभा चौहान	भाजपा
25	जालोर (जालोर)	जोगेश्वर गर्ग	भाजपा
26	रेवदर (सिरोही)	जगसीराम	भाजपा
27	कपासन (चित्तोड़गढ़)	अर्जुन लाल जिंगर	भाजपा
28	शाहपुरा (भीलवाड़ा)	कैलाश चन्द मेघवाल	भाजपा
29	केशवराय पाटन (बूंदी)	चन्द्रकांता मेघवाल	भाजपा
30	रामगंजमंडी (कोटा)	मदन दिलावर	भाजपा
31	डग (झालावाड़)	कालूराम	भाजपा
32	भोपालगढ़ (जोधपुर)	पुखराज	आरएलटीपी
33	मेड़ता (नागौर)	इन्दिरा देवी	आरएलटीपी
34	दूदू (जयपुर)	बाबूलाल नागर	निर्दलीय

15वीं विधानसभा चुनाव : अजजा रिजर्व सीटें

राजस्थान विधानसभा की 25 सीटें अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित हैं। इनमें से कांग्रेस को 12, भाजपा को 09, बीटीपी को 02 तथा निर्दलीयों को 02 सीटें मिली हैं। खास बात यह है कि आदिवासी बहुल दक्षिणी राजस्थान में भारतीय ट्राइबल पार्टी (BTP) ने न केवल दमदार उपस्थिति दर्ज की है, वरन् वह डूँगरपुर जिले में 02 सीटें जीतने में भी सफल रही है।

क्र.स.	एसटी	विजयी प्रत्याशी	राजनीतिक दल
1	प्रतापगढ़ (प्रतापगढ़)	रामलाल मीना	कांग्रेस
2	किशनगंज (बारां)	निर्मला सहारिया	कांग्रेस
3	बागीदौरा (बांसवाड़ा)	महेन्द्रजीत मालवीय	कांग्रेस
4	बांसवाड़ा (बांसवाड़ा)	अर्जुन सिंह बामनिया	कांग्रेस
5	घाटोल (बांसवाड़ा)	हिरेन्द्र निनामा	भाजपा
6	डूंगरपुर (डूंगरपुर)	गणेश घोघरा	कांग्रेस
7	खेरवाड़ा (उदयपुर)	दयाराम परमार	कांग्रेस
8	बामनवास (सवाई माधोपुर)	इन्दिरा मीणा	कांग्रेस
9	लालसोट (दौसा)	परसादी लाल मीणा	कांग्रेस
10	सपोटरा (करौली)	रमेश चन्द मीणा	कांग्रेस
11	टोड़भीम (करौली)	पृथ्वीराज मीणा	कांग्रेस
12	राजगढ़–लक्ष्मणगढ़ (अलवर)	जोहरी लाल मीणा	कांग्रेस
13	जमवारामगढ़ (जयपुर)	गोपाल लाल मीणा	कांग्रेस
14	धरियावद (प्रतापगढ़)	गोतम लाल	भाजपा
15	गढ़ी (बांसवाड़ा)	कैलाष चन्द मीणा	भाजपा
16	आसपुर (डूंगरपुर)	गोपीचन्द मीणा	भाजपा
17	सलूम्बर (उदयपुर)	अमृत लाल मीणा	भाजपा
18	उदयपुर ग्रामीण (उदयपुर)	फूलसिंह मीणा	भाजपा
19	झाडौल (उदयपुर)	बाबूलाल	भाजपा
20	गोगुन्दा (उदयपुर)	प्रताप लाल भील (गमेती)	भाजपा
21	पिंडवाड़ा–आबू (सिरोही)	समाराम रासिया (गमेती)	भाजपा
22	सागवाड़ा (डूंगरपुर)	रामप्रसाद	बीटीपी
23	चौरासी (डूंगरपुर)	राजकुमार रोत	बीटीपी
24	कुशलगढ़ (बांसवाड़ा)	रमीला खड़िया	निर्दलीय
25	बस्सी (जयपुर)	लक्ष्मण मीणा	निर्दलीय

15वीं विधानसभा में महिलाएँ

राजस्थान में 15वीं विधानसभा के लिए हुए चुनाव में यहाँ कांग्रेस ने 27 महिलाओं को टिकट दिया, वहीं बीजेपी ने 23 महिलाओं को अपना उम्मीदवार बनाया था। इनमें से कांग्रेस की 11 और बीजेपी की 10 उम्मीदवारों ने जीत दर्ज की।[69] बाद में रामगढ़ सीट से साफिया जुबेर खान के चुनाव जीतने से कांग्रेस की महिला विधायकों की संख्या 12 हो गई। राज्य की 200 सीटों के लिए हुए चुनाव में कुल 187 महिला प्रत्याशियों ने अपना भाग्य आजमाया।[70] लेकिन इनमें से मात्र 24 महिलाओं ने जीत हासिल की है, जबकि पिछले चुनाव में 166 महिलाओं में से 28 महिलाओं ने जीत दर्ज की थी।[71] राज्य में पहली महिला विधायक यशोदा देवी उपचुनाव (नवम्बर, 1953) के जरिए विधानसभा में पहुँची थीं।[72] राज्य में पहली विधानसभा से अब तक महिलाओं का प्रतिनिधित्व इस प्रकार रहा है[73] –

विधानसभा	चुनावी वर्ष	महिला विधायक	महिला मैदान में
पहली विधानसभा	1952	नगण्य	–
दूसरी विधानसभा	1957	09	22
तीसरी विधानसभा	1962	08	14
चौथी विधानसभा	1967	06	11
पांचवी विधानसभा	1972	04	17
छठवीं विधानसभा	1977	07	32
सातवीं विधानसभा	1980	10	31
आठवीं विधानसभा	1985	16	–
नवीं विधानसभा	1990	11	93
दसवीं विधानसभा	1993	09	96
11 विधानसभा	1998	14	69
12 विधानसभा	2003	12	118
13 विधानसभा	2008	28	154
14 विधानसभा	2013	28	166
15 विधानसभा	2018	24	187

2003 में हालांकि, प्रदेश में पहली बार महिला मुख्यमंत्री, महिला राज्यपाल तथा महिला विधानसभा अध्यक्ष थीं, लेकिन विधानसभा में कुल महिला विधायकों की संख्या सिर्फ 12 रही।[74]

15वीं विधानसभा में महिलाएँ – दलवार सीटें		
क्र.स.	राजनीतिक दल	महिला विधायकों की संख्या
1	कांग्रेस	12
2	भाजपा	10
3	आरएलटीपी	01
4	निर्दलीय	01

15वीं विधानसभा में कांग्रेस की 12 महिला विधायक हैं।

15वीं विधानसभा में कांग्रेस की महिला विधायक			
क्र. स.	महिला विधायक का नाम	विधानसभा क्षेत्र का नाम	सीट पर आरक्षण की स्थिति
1	शकुन्तला रावत	बानसूर (अलवर)	सामान्य
2	निर्मला सहरिया	किशनगंज (बारां)	अजजा
3	जाहिदा खान	कामां (भरतपुर)	सामान्य
4	कृष्णा पूनिया	सादुलपुर (चुरू)	सामान्य
5	गंगा देवी	बगरू (जयपुर)	अजा
6	मनीषा पंवार	जोधपुर (जोधपुर)	सामान्य
7	दिव्या मदेरणा	ओसियाँ (जोधपुर)	सामान्य
8	मीना कंवर	शेरगढ़ (जोधपुर)	सामान्य
9	इन्द्रा मीणा	बामनवास (सवाई माधोपुर)	अजजा
10	ममता भूपेष	सिकराय (दौसा)	अजा
11	मंजू देवी	जायल (नागौर)	अजा
12	साफिया जुबैर खान	रामगढ़ (अलवर)	सामान्य

15 वीं विधानसभा में भाजपा की 10 महिला विधायक हैं।

जोधपुर सुर्यकान्त व्यास राज्य विधानसभा में इस बार सबसे बुजुर्ग महिला विधायक के साथ–साथ सबसे ज्यादा बार निर्वाचित (06 बार) महिला विधायक भी है।[75]

आरएलटीपी की एकमात्र महिला विधायक

इन्दिरा देवी मेड़ता से चुनाव जीती हैं। मेड़ता सीट अनुसूचित जाति के लिए रिजर्व सीट है।

निर्दलीय

रमीला खडिया ने कुशलगढ से निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनाव जीता है। कुशलगढ़ (बांससवाड़ा) सीट अनुसूचित जनजाति के लिए रिजर्व है।

राजस्थान की राजनीति में पहली महिलाएं [76] –

1. विधायक – यशोदा देवी, नवम्बर 1953 में उपचुनाव में जीती।
2. मंत्री – कमला बेनीवाल (27 साल की उम्र में ही प्रदेश की पहली महिला मंत्री बनीं)।
3. मुख्यमंत्री – श्रीमती वसुन्धरा राजे (2003 में प्रदेश की पहली महिला मुख्यमंत्री बनीं)।
4. विधानसभा अध्यक्ष – सुमित्रा सिंह, 2003 में प्रदेश की पहली महिला विधान सभाध्यक्ष चुनीं गई। ये नौ बार विधायक बनीं।

15वीं विधानसभा में निर्दलीय

15वीं विधानसभा के लिए हुए चुनाव में कुल 840 निर्दलीयने दांव खेला,[77] जिनमें से 15वीं विधानसभा के लिए हुए चुनाव में 200 सीटों में से 13 पर निर्दलीयों ने चुनाव जीता है।[78] ये 13 सीटें इस प्रकार हैं :–

15वीं विधानसभा में निर्दलीय			
क्र.स.	विधानसभा क्षेत्र	निर्वाचित निर्दलीय	सीट पर आरक्षण की स्थिति
1	श्रीगंगानगर (गंगानगर)	राजकुमार गौड़	सामान्य
2	खंडेला (सीकर)	महादेव सिंह	सामान्य
3	शाहपुरा (जयपुर)	आलोक बेनीवाल	सामान्य
4	दूदू (जयपुर)	बाबूलाल नागर	अजा
5	बस्सी (जयपुर)	लक्ष्मण मीणा	अजजा
6	बहरोड़ (अलवर)	बलजीत यादव	सामान्य
7	थानागाजी (अलवर)	कांति प्रसाद	सामान्य
8	गंगापुर सिटी (सवाई माधोपुर)	रामकेश मीणा	सामान्य
9	किशनगढ़ (अजमेर)	सुरेश टांक	सामान्य
10	मारवाड़ जंक्षन (पाली)	खुषवीर सिंह	सामान्य
11	सिरोही (सिरोही)	संयम लोढ़ा	सामान्य
12	कुशलगढ़ (बांसवाड़ा)	रमीला खडिया	अजजा
13	महुआ (दौसा)	ओमप्रकाश हुड़ला	सामान्य

15वीं विधान सभा में मुस्लिम

राजस्थान की 15वीं विधानसभा के चुनाव में 9 मुस्लिम उम्मिदवारों ने जीत दर्ज करायी है। इनमें से 08 कांग्रेस तथा एक बसपा से है।

15वीं विधान सभा में मुस्लिम			
क्र.स.	विधानसभा क्षेत्र	विजयी प्रत्याशी	राजनीतिक दल
1	फतेपुर	हाकम अली खान	कांग्रेस
2	किशनपोल	अमीन कागजी	कांग्रेस
3	आदर्श नगर	रफीक खान	कांग्रेस
4	कामां	जाहिदा खान	कांग्रेस
5	सवाई माधोपुर	दानिश अबरार	कांग्रेस
6	पोकरण	शाले मोहम्मद	कांग्रेस
7	शिव	अमीन खान	कांग्रेस
8	रामगढ़	साफिया जुबैर खान	कांग्रेस
9	नगर	वाजिब अली	बसपा

15वीं विधानसभा : पदाधिकारी

प्रोटेम स्पीकर 15वीं विधानसभा में भाजपा के विधायक गुलाब चन्द कटारिया प्रोटेम स्पीकर बनाए गए। और वें 15वीं विधानसभा में उदयपुर शहर के प्रतिनिधि हैं। राज्यपाल कल्याण सिंह ने इस हेतु 14 जनवरी, 2019 को उन्हें विधानसभा सदस्य के रूप में पद की शपथ दिलायी। प्रोटेम स्पीकर नयी विधानसभा के सदस्यों को शपथ दिलाता है तथा विधानसभा अध्यक्ष के निर्वाचन तक पद पर रहता है।[79] सदन के सबसे वरिष्ठ विधायक को प्रोटेम स्पीकर बनाया जाता है। कटारिया 8वीं बार विधायक बने हैं और 15वीं विधानसभा में सबसे सीनियर हैं। संविधान में प्रोटेम स्पीकर की व्यवस्था इसलिए की गई है, ताकि नया विधानसभाध्यक्ष और उपाध्यक्ष चुने जाने तक वह संसदीय व्यवस्थाओं को गति दे सके।[80] 14वीं विधानसभा में जब भाजपा सत्ता में आई थी, तो कांग्रेस नेता प्रद्युम्न सिंह को प्रोटेम स्पीकर चुना गया था।[81]

स्पीकर

पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा नाथद्वारा से कांग्रेस विधायक सी.पी. जोशी को स्पीकर (विधानसभा अध्यक्ष) का जिम्मा 15वीं विधानसभा में मिला हैं।[82] सी.पी. जोशी नाथद्वारा से 5 बार विधायक रह चुके हैं (1980, 1985, 1998, 2003 व 2018 में)। 2008 में नाथद्वारा सीट पर मात्र एक मत से चुनाव हार गये थे।[83] जोशी 2007 से 2011 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष रहे। 1998 में अशोक गहलोत की सरकार में कैबिनेट मंत्री – पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री बने। 2009 में वे भीलवाड़ा से सांसद बने। उसके बाद 2009 से 2014 तक वे मनमोहन सिंह की यूपीए सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे। तब वे कांग्रेस के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गाँधी के बेहद करीबी रहे।[84] व कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव तथा कई प्रदेशों के प्रभारी रहे हैं। अभी उनके कन्धों पर 'राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी निभा रहे हैं।[85]

मुख्य सचेतक

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के करीबी और जयपुर की हवामहल सीट से कांग्रेस के विधायक महेश जोशी को 15वीं विधानसभा में मुख्य सचेतक बनाया गया है। जोशी 1998 से 2003 तक किशनपोल विधानसभा सीट से विधायक रहे। तब गहलोत सरकार में उप मुख्य सचेतक की भूमिका में थे। वे 2009 से 2014 के बीच जयपुर लोकसभा सीट से सांसद रहे। 2018 में हवामहल सीट से विधायक चुने गये जोशी कांग्रेस सेवादल के प्रदेश अध्यक्ष भी रह चुके हैं।[86]

उप–मुख्य सचेतक

नावां विधायक महेन्द्र चौधरी 15वीं विधानसभा में उप–मुख्य सचेतक चुने गये हैं। चौधरी 2008 से 2013 में नावां से पहली बार विधायक बने। इस बार भी वे नावां सीट से विधायक हैं। वे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के करीबी हैं।[87] वे राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।[88]

नेता प्रपिपक्ष

15वीं विधानसभा में भाजपा ने पूर्व गृहमंत्री और वरिष्ठ नेता गुलाबचन्द कटारिया को अपने विधायक दल का नेता चुना है यानी वे सदन में नेता प्रतिपक्ष रहेंगे। कटारिया तीसरी बार नेता प्रतिपक्ष बने हैं। वे 1998 से 2003 तक 11 वीं विधानसभा में तथा 2008 से 2013 तक 13वीं विधानसभा में भी नेता प्रतिपक्ष रह चुके हैं।[89]

उपनेता प्रतिपक्ष

15वीं विधानसभा में भाजपा ने पूर्व संसदीय कार्यमंत्री राजेन्द्र सिंह राठौड़ को उपनेता प्रतिपक्ष बनाया है।[90]

15वीं विधानसभा चुनाव घोषणा–पत्र

राजस्थान में कांग्रेस व भाजपा ही मुख्यधारा के राजनीतिक दल हैं। इस कारण हमने इन दोनों के चुनावी घोषणा पत्र की चर्चा की है।

जनघोषणा पत्र – कांग्रेस

शीर्षक

'एक ही संकल्प, कांग्रेस ही विकल्प।'

राजस्थान विधानसभा चुनाव के लिए 29 नवम्बर, 2018 को जयपुर में प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर कांग्रेस पार्टी ने 400 से ज्यादा वादों वाला अपना घोषणा–पत्र (जन घोषणा–पत्र) जारी किया। इस अवसर पर कांग्रेस नेता सचिन पायलट और अशोक गहलोत मौजूद थे।[91] करीब 2 लाख लोगों के सुझावों के बाद बनाए गए इस जन घोषणा पत्र की मुख्य बातें ये हैं[92] –

किसानों के लिए

कर्जमाफी (10 दिन में), बुजुर्ग किसानों को पेंषन, कृषि यंत्रों को जीएसटी से बाहर लाना, फसल बीमा, मसाला बोर्ड, गाँव में गोचर भूमि के लिए अलग बोर्ड का गठन मुफ्त में पशु बीमा, उष्ट्र संरक्षण नीति, किसानों और युवाओं के लिए अलग से आयोग।

युवाओं के लिए– बेरोजगारी भत्ता

महिलाओं के लिए प्रतिमाह 3500 रु. तथा पुरूषों के लिए 3000 रू. भत्ता। परीक्षा के दौरान अभ्यर्थियों को स्वरोजगार के लिए सस्ती दर पर लोन, यात्रा का खर्च सरकार देगी।

स्वास्थ्य

घोषणा पत्र में हर व्यक्ति को मुफ्त में स्वास्थ्य सुविधाएँ देने का वादा कांग्रेस ने किया है। इस हेतु पार्टी ने 'राइट टू हैल्थ' कानून लाने की बात कही है। पंचायत मुख्यालयों पर उप स्वास्थ्य केन्द्रों की स्थापना व जिला स्तर पर ब्लड बैंक की स्थापना।

महिलाओं के लिए

1. मुफ्त में आजीवन शिक्षा देने का वादा। सत्र 2019–20 से लागू।
2. बच्चों के लिए शिशु पालना घर बनाए जाएंगे। पंचायत समीती स्तर पर बालिका छात्रावास की स्थापना।
3. प्रत्येक जिला मुख्यालय पर कामकाजी महिलाओं के लिए हॉस्टल की व्यवस्था।
4. प्रत्येक जिले में महिलाओं के लिए आईटीआई और पॉलिटेक्निक कॉलेज की स्थापना।
5. 24×7 वुमन हेल्पलाइन कॉल सेन्टर की स्थापना की जाएगी। इसमें सिर्फ महिलाएं ही काम करेंगी।

पत्रकारों के लिए

पत्रकार सुरक्षा कानून, पत्रकार आवास योजना, पत्रकारिता विश्वविद्यालय को फिर से शुरू करना।

शिक्षा

वैदिक संस्कार एवं शिक्षा बोर्ड का गठन ग्रामीण अभियांत्रिकी सेवा का गठन।

अन्य

1. न्यूनतम मजदूरी की दरों को महंगाई सूचकांक के आधार पर निर्धारित किया जाएगा।
2. आदिवासी और पहाड़ी क्षेत्रों में नए उद्योगों की स्थापना करने वालों को कर मुक्त रखा जाएगा।
3. राज्य विधि आयोग का गठन होगा।
4. चुनावी समीक्षकों के अनुसार किसानों की कर्जमाफी और बेरोजगारी भत्ते के वादे ने कांग्रेस को सत्ता के करीब पहुँचा दिया।

संकल्प घोषणा–पत्र – भाजपा

केन्द्रीय वित्त मंत्री अरूण जेटली ने 27 नवम्बर, 2018 को भाजपा का घोषणा पत्र जारी किया।

पार्टी ने इसे 'संकल्प–पत्र' नाम दिया।[93] इस घोषणा पत्र की मुख्य बातें इस प्रकार हैं :–

किसानों के लिए

250 करोड़ रू. का ग्रामीण स्टार्ट–अप फंड स्थापित किया जाएगा। कस्टम हायरिंग योजना का विस्तार किया जाएगा। किसानों की आय दोगुनी करने का वादा। किसानों के लिए ऋण राहत आयोग। एक प्रतिशत ब्याज पर कर्ज।

युवाओं के लिए

प्रतिमाह 5000 रू. के बेरोजगारी भत्ते का वादा। हर वर्ष सरकारी क्षेत्र में 30 हजार तथा निजी क्षेत्र में 5 साल में 50 लाख रोजगार देने का वादा। 3% ब्याज पर कर्ज। प्रत्येक उपखण्ड पर युवाओं के लिए सैन्य भर्ती प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाएंगे।

महिलाओं के लिए

1. बड़े शहरों ओर बस्तियों में वर्किंग वूमेन होस्टल चेन बनाई जाएगी।
2. कौशल शिक्षा, शोध और व्यक्तित्व निखार के लिए डिविजनल रिसोर्स सेन्टर्स की स्थापना की जाएगी।
3. वूमेन पोर्टल की स्थापना की जाएगी।

स्वास्थ्य

1. यूनिवर्सल हेल्थ इंश्योरेंस को भामाशाह योजना के साथ जोड़ा जाएगा।
2. हर ग्राम पंचायत मुख्यालय पर 108 एम्बुलेंस सुविधा।

योग

हर जिले में योग भवन का निर्माण किया जाएगा।

सड़क

सभी जिलों को फोरलेन 'राजस्थान माला' हाइवे से जोड़ा जाएगा।

बोर्ड

योग बोर्ड, भगवान परशुराम बोर्ड, राजस्थान वैदिक स्टडीज बोर्ड, मोक्ष मुक्तिधाम बोर्ड, सिलाई कला बोर्ड, स्वर्ण कला बोर्ड, रजत कला बोर्ड, काष्ठ कला बोर्ड, असंगठित श्रमिक कल्याण बोर्ड, राज्य गोचर विकास बोर्ड, आर्थिक पिछड़ा वर्ग विकास आयोग, शोध नियामक आयोग आदि के गठन का वादा।

शहरों में

मनरेगा की तर्ज पर शहरी रोजगार गारंटी कानून।

पेयजल व सिंचाई

अरब सागर से गुजरात होते हुए सांचोर (जालोर) तक पानी लाकर कृत्रिम इनलैंड पोर्ट बनाया जाएगा। केन्द्र के सहयोग से ईस्टर्न राजस्थान कैनाल प्रोजेक्ट के तहत् 13 जिलों को पानी उपलब्ध कराया जाएगा।

हॉट सीट्स

झालरापाटन – वसुन्धरा राजे V/S मानवेन्द्र सिंह

1. पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे सिन्धिया भाजपा से चुनावी मैदान में थीं।
2. वसुन्धरा राजे के खिलाफ कांग्रेस ने भाजपा नेता जसवंत सिंह के पुत्र मानवेन्द्र सिंह को मैदान में उतारा था।
3. वसुन्धरा व मानवेन्द्र दोनों ही उम्मीदवार राजपूत थे। मानवेन्द्र सिंह 14वीं विधानसभा में शिव विधानसभा क्षेत्र बाड़मेर से विधायक थे। झालरापाटन क्षेत्र से वसुन्धरा राजे ने मानवेंद्र सिंह को 34560 वोटों से हराया। वसुन्धरा के गढ़ झालावाड़ जिले की चारों सीटें भाजपा ने जीती हैं।[94]
4. वसुन्धरा राजे 1987 में प्रदेश भाजपा का उपाध्यक्ष बनीं। 2003 में पहली बार मुख्यमुंत्री बनीं। वे तब राजस्थान की पहली महिला सीएम बनीं। वे 2013 में दूसरी बार राजस्थान की सीएम बनीं।

सरदारपुरा – अशोक गहलोत V/s शंभूसिंह खेतासर

1. प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत बतौर कांग्रेस प्रत्याशी तीसरी बार चुनावी मैदान में थे।
2. भाजपा ने गहलोत के खिलाफ शंभूसिंह खेतासर को मैदान में उतारा। सरदारपुरा क्षेत्र से कांग्रेस के जादूगर गहलोत ने भाजपा के खेतासर को 45547 मतों से पराजित किया। गहलोत ने 2013 के चुनाव में भी खेतासर को पराजित किया था, लेकिन तब जीत का अन्तर 18 हजार के करीब था। 15वीं विधानसभा के लिए निर्वाचित गहलोत विगत 5 बार से सरदारपुरा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर रहें हैं।

नाथद्वारा – सीपी जोशी V/S महेश प्रताप

नाथद्वारा में 2008 के विधानसभा चुनाव में मात्र एक वोट के अन्तर से हारने वाले कांग्रेस नेता सी.पी. जोशी 2018 में 'बॅटल फॉर वोट' की लड़ाई में फिर मैदान में उतरे। उनके खिलाफ भाजपा ने कांग्रेस के बागी महेश प्रताप सिंह को मैदान में उतारा।[95]

टोंक – सचिन पायलट V/S यनुस खान।

कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट ने यहां 54861 मतों से भाजपा के एकमात्र मुस्लिम प्रत्याशी यूनुस को हराया। पायलट के गढ़ टोंक जिले की 4 में से 3 सीटें कांग्रेस के खाते में गई।[96] भाजपा ने यहां पहले अजित मेहता को टिकट दिया, जिसे बदलकर यूनुस खान को दिया गया। टोंक सीट पर विगत 7 चुनावों में 5 बार भाजपा जीती है और केवल दो बार कांग्रेस प्रत्याशी कामयाब हुए हैं। 2008 और 2013 में भी भाजपा ही जीती। [97] सचिन को टिकट देकर कांग्रेस ने अपनी 46 साल पुरानी परम्परा तोड़ी है। यहॉ 46 साल बाद कांग्रेस ने किसी गैर मुस्लिम को टिकट दिया है।[98] सचिन पायलट 2004 में दौसा से तथा 2009 में अजमेर से लोकसभा चुनाव लड़े और जीते भी ।[99] टोंक सीट पर 9 प्रत्याषी मैदान में थे। यहॉ से बसपा ने भी मुस्लिम प्रत्याषी के रूप में मोहम्मद अली को टिकट दिया था। यहॉ से एक निर्दलीय भी मुस्लिम था।[100] यूनुस खान 2003 में पहली बार डीडवाना सीट से विधायक चुने गए। वे प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष भी रहे।

सपोटरा – गोलमा देवी V/S रमेश मीणा।

कांग्रेस के रमेश मीणा (14वीं विधानसभा में कांग्रेस के उपनेता) ने कद्दावर मीणा नेता एवं राज्यसभा सदस्य डॉक्टर किरोड़ी लाल मीणा की पत्नी गोलमा देवी को 4004 मतों से हराया। राजनीतिक दृष्टि से रमेश और किरोड़ी कट्टर विरोधी हैं।

उदयपुर – गिरिजा व्यास V/S गुलाबचन्द कटारिया।

भाजपा सरकार के गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने यहां कांग्रेसी नेता गिरिजा व्यास (पूर्व केन्द्रीय मंत्री) को 9307 मतों से हराया।[101] गुलाब चन्द कटारिया 1977 में उदयपुर से पहली बार विधायक बने। वे 7 बार विधायक व 1 बार सांसद रहे। वे 2002 से 2003 तक नेता प्रतिपक्ष रहे।

यहाँ रणधीर सिंह की जनता सेना से दलपत सुराणा भी चुनावी मैदान में थे।

डीग – कुम्हेर (भरतपुर) – विश्वेन्द्र सिंह V/S शैलेश सिंह

कांग्रेस नेता विश्वेन्द्र सिंह ने भाजपा नेता व दिगम्बर सिंह के पुत्र शैलेश सिंह को 8218 मतों से हराया।[102]

सांगानेर (जयपुर) – घनश्याम तिवाड़ी V/S अशोक लाहोटी V/S पुष्पेन्द्र भारद्वाज।

संगानेर से भारत वाहिनी पार्टी के संस्थापक घनश्याम तिवाड़ी, भाजपा के अशोक लाहोटी व कांग्रेस के पुष्पेन्द्र भारद्वाज के अलावा ज्ञानदेव आहूजा ने निर्दलीय के रूप में चुनावी मैदान में ताल ठोक। सांगानेर से जयपुर नगर निगम के मेयर अशोक लाहोटी ने 35405 मतों से जीत दर्ज की, जबकि तिवाड़ी की जमानत जब्त हो गई। तिवाड़ी को मात्र 17371 वोट मिले।

झोटवाड़ा – राजपाल शेखावत V/S लालचंद कटारिया

भाजपा के एमएलए व मंत्री राजपाल सिंह शेखावत को 2018 के चुनाव में लालचन्द कटारिया (कांग्रेस प्रत्याशी) ने पराजित किया। जबकि शेखावत ने 2008 में कटारिया को तथा 2013 में उनकी पत्नी को हराया था।[103]

महवा – ओम प्रकाश हुडला V/S राजेन्द्र मीना।

महवा सीट पर इस बार त्रिकोणीय मुकाबला था। भाजपा ने सीटिंग एमएलए ओम प्रकाश हुड़ला का टिकट काटकर कद्दावर मीणा नेता डॉ. किरोड़ी लाल मीणा के भतीजे राजेन्द्र मीणा को महुआ में अपना उम्मीदवार बनाया, जबकि ओम प्रकाश हुड़ला ने निर्दलीय के रूप में ताल ठोकी। कांग्रेस ने अजय बोहरा को मैदान में उतारा। ओम प्रकाश हुडला यहाँ से अपनी सीट बचाने में सफल रहे।

अन्ता (बारॉ) – प्रभुलाल सैनी V/S प्रमोद जैन भाया।

भाजपा सरकार के मंत्री प्रभुलाल सैनी को हाड़ौती क्षेत्र की अन्ता सीट पर कांग्रेस के प्रमोद जैन भाया ने शिकस्त दी।

बाड़मेर – सोनाराम V/S मेवाराम।

भाजपा के कर्नल सोनाराम चौधरी को बाड़मेर विधानसभा सीट पर कांग्रेस के मेवाराम जैन ने शिकस्त दी।

राजाखेड़ा – रोहित बोहरा V/S अशोक शर्मा

कांग्रेस ने राजाखेड़ा (धौलपुर) विधानसभा सीट से पूर्व वित्त मंत्री प्रद्युम्न सिंह के पुत्र रोहित बोहरा को अपना प्रत्याशी बनाया, जबकि भाजपा ने पूर्व विधायक अशोक शर्मा को मैदान में उतारा। प्रद्युम्न सिंह राजखेड़ा से कांग्रेस प्रतिनिधि के तौर पर आठ बार विधायक रहे हैं। इस बार उनके पुत्र रोहित बोहरा साख बचाने में सफल रहे हैं।

लाड़पुरा (कोटा) – गुलनाज V/S भवानी सिंह राजावत V/S कल्पना देवी।

कांग्रेस के झालरापाटन उम्मीदवार मानवेन्द्र सिंह के जवाब में भाजपा ने अपने सीनियर नेता भवानी सिंह राजावत का टिकट काटकर राजघराने की बहू कल्पना देवी को टिकट दिया। भवानी सिंह निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में मैदान में आ गए। कांग्रेस ने नईमुद्दीन गुड्डू की पत्नी गुलनाज को मैदान में उतारा। इस प्रकार लाडपुरा

में त्रिकोणीय संघर्ष की स्थिति बनी। यहाँ इज्यराज सिंह की पत्नी कल्पना देवी ने जीत दर्ज की।

बीकानेर पश्चिम – बीड़ी कल्ला V/S अशोक जोशी।

बीकानेर पश्चिम सीट पर कांग्रेस के बीडी कल्ला पिछले दो चुनावों में भाजपा के अशोक जोशी से हार रहे थे। इस कारण इस बार कांग्रेस ने यहाँ से कल्ला का टिकट काटकर यशपाल गहलोत को दे दिया। बाद में कल्ला के समर्थकों के हंगामे के बाद यशपाल को बीकानेर पूर्व भेजा गया और कल्ला को यहां का टिकट दिया गया। यहाँ से कल्ला चुनाव जीत गये।

रतनगढ़ (चूरू) – राजकुमार रिणवा V/S अभिनेश महर्षि V/S भंवर लाल तिवाड़ी।

भाजपा ने अपने सीटिंग एमएलए राजकुमार रिणवां का टिकट काटकर अभिनेश महर्षि को 2018 के विधानसभा चुनाव में अपना उम्मीदवार बनाया। वहीं कांग्रेस ने भंवरलाल तिवाड़ी को टिकट दिया। राजकुमार रिणवां स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में मैदान में उतरे। इस त्रिकोणीय संघर्ष में भाजपा के अभिनेश महर्षि ने जीत दर्ज की । जबकि दूसरे स्थान पर निर्दलीय पूसाराम गोदारा रहे।

निंबाहेड़ा (चितौड़गढ़) – श्रीचन्द कृपलानी V/S उदय लाल आंजना।

कांग्रेसी प्रत्याशी आंजना ने भाजपा सरकार के मंत्री श्रीचन्द कृपलानी को यहां से 2018 के विधानसभा चुनाव में मात दी। श्रीचन्द कृपलानी 2004 में चित्तौड़गढ़ से सांसद भी रहे हैं।

15वीं विधानसभा में चर्चित चुनावी हार

रामेश्वर डूडी (नोखा, कांग्रेस)

14वीं विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रहे डूडी 15वीं विधानसभा के चुनाव में हारे गये हैं। उन्हें भाजपा के बिहारीलाल विश्नोई ने हराया। डूडी बीकानेर से पैराशूट प्रत्याशी कन्हैया लाल झंवर को टिकट दिलाने के लिए आलाकमान से भी भिड़ गये थे, किन्तु झंवर के चुनाव हार जाने से डूडी की काफी किर–किरी हुई।

गिरिजा व्यास (उदयपुर, कांग्रेस)

भाजपा सरकार में गृहमंत्री रहे गुलाबचन्द कटारिया ने कांग्रेसी नेता गिरिजा व्यास को 9307 मतों से हराया।

गोलमा देवी (सपोटरा, भाजपा)

इन्हें कांग्रेस के रमेश मीणा ने हराया है। 14वीं विधानसभा में कांग्रेस के उप–नेता रहे रमेश मीणा ने कद्दावर मीणा नेता डॉ. किरोड़ी लाल मीणा की पत्नी गोलमा को 4004 मतों से हराया है। सपोंटरा से गोलमा और महुआ से भतीजे राजेंन्द्रे के चुनाव हारने से किरोड़ी लाल मीणा की काफी किरकिरी हुई है।

घनश्याम तिवाड़ी – (सांगानेर, भारत वाहिनी पार्टी)

इनकी जमानत जब्त हो गई है। इन्हें मात्र 17371 वोट मिले हैं। सांगानेर विधानसभा से जयपुर नगर निगम के मेयर अशोक लाहोटी (भाजपा) ने 35405 मतों से जीत दर्ज की है। ?

शैलेन्द्र सिंह (डीग, भाजपा)

कांग्रेस के विश्वेन्द्र सिंह ने दिगम्बर सिंह के बेटे भाजपा प्रत्याशी शैलेन्द्र सिंह को 8218 मतों से पराजित किया।

कामिनी जिंदल (एनयूजेडपी, श्रीगंगानर)

श्रीगंगानगर विधानसभा क्षेत्र के प्रदेश की सबसे अमीर प्रत्याशी कामिनी जिंदल को 2018 के चुनाव में शर्मनाक हार मिली है। उन्हें 5 हजार वोट भी नहीं मिले हैं। नेशनल यूनियानिस्ट जमींदार पार्टी की उम्मीदवार कामिनी का यह हाल तब है जब 2013 में उन्होंने पहली बार चुनाव लड़ा और इस सीट के इतिहास में सर्वाधिक 37068 मतों के अन्तर से चुनाव जीतने का रिकॉर्ड भी अपने नाम किया था। उन्होंने तब बीजेपी के प्रत्याशी राधेश्याम को हराया था। यहाँ 62 साल के इतिहास में पहली बार कोई महिला विधायक बनी थी।[104] कामिनी ने 2018 के विधानसभा चुनाव के समय अपनी कुल संपत्ति चुनावी हलफनामे में 287 करोड़ रू. से ज्यादा बताई है।[105]

युनुस खान (भाजपा, टोंक)

टोंक सीट से कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष सचिन पायलट को 109040 वोट मिले, जबकि भाजपा के एकमात्र मुस्लिम उम्मीदवार युनुस खान को 54861 वोट ही मिले। दूसरी तरफ इस सीट पर खड़े हुए 8 अन्य उम्मीदवार दो हजार मतों का आंकड़ा भी प्राप्त नहीं कर पाए।[106] ज्ञातव्य है कि टोंक विधानसभा क्षेत्र में 55 हजार मुस्लिम मतदाता हैं और इन्हें अपने पक्ष में करने के लिए ही भाजपा ने अंतिम समय में यहां से प्रत्याशी बदलकर यूनुस खान को मैदान में उतारा था।

15वीं विधानसभा के चर्चित चुनावी जीत

बुलाकी दास कल्ला (बी. डी. कल्ला) (बीकानेर पश्चिम, कांग्रेस)

लगातार दो बार चुनाव हारने के कारण कांग्रेस की पहली लिस्ट में कल्ला का टिकट कट गया था और काफी हल्ले के बाद कल्ला को टिकट मिला है। कल्ला ने भाजपा के अशोक जोशी को 6190 मतों से हराया है। पिछले दो चुनावों में कल्ला को जोशी हराते रहे हैं। पहले कांग्रेस ने यशपाल गहलोत को बीकानेर पश्चिम से टिकट दिया था, जो बाद में कल्ला को दे दिया गया।

कृष्णा पूनिया (कांग्रेस, सादुलपुर)

देश को गोल्ड दिलाने वाली खिलाड़ी कृष्णा पूनिया को 70 हजार से ज्यादा वोट मिले। कृष्णा सादुलपुर से पहली बार चुनावी मैदान में थी और जीत गईं।[107]

निष्कर्ष

राजस्थान ,मध्यप्रदेश व छतीसगढ में विधानसभा चुनावों में हार मई, 2014 में सत्ता में आयी मोदी सरकार के लिए बड़ा झटका है, क्योंकि इन राज्यों ने बीजेपी को केन्द्र में सत्ता में पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई थी।[108] छतीसगढ़ और मध्यप्रदेश में विगत 15 सालों से भाजपा सत्ता में थी। इन राज्यों मे जीत ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गाँधी के लिए प्राणवायु का संचार किया है। राजस्थान विधानसभा चुनाव (7 दिसम्बर 2018) से कुछ दिन पहले 48 वर्षीय काग्रेस राहुल गाँधी ने एक प्रेस

कॉन्फेस में कहा था – प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 'राष्ट्र के ह्रदय की आवाज ' सुनने में असफल रहे हैं। ('Prime Minister Narendra Modi had Failed to Listen to the headbeat of the Nation'.) [(109)] भाजपा के अन्दर जिस प्रकार नितिन गडकरी खुलकर प्रधनमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की आलोचना की है , उससे स्पष्ट है कि पार्टी और जनता के बीच इन तीन राज्यों के चुनाव परिणामों के बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ग्राफ नीचे आया है। राजस्थान विधान सभा चुनाव में भाजपा की हार में न केवल प्रादेशिक,वरन् राष्ट्रीय मुद्दों ने भी अहम भूमिका निभायी हैं। साथ ही एंटी–इन्कम्बेंसी प्रभाव भी रहा है। कांग्रेस की बदली हुई रणनीति ने भी उसे जीत दिलायी, परन्तु कांग्रेस के पक्ष में चुनाव पूर्व जो माहौल था, उसे पार्टी वोट बैंक में तब्दील करने में असफल रही है और बड़ी मुश्किल से बहुमत के आंकडे के करीब पहुँची है (बहुमत के लिए 101 सीटों की आवश्यकता है, जबकि कांग्रेस को 100 सीटें मिली हैं।) राजस्थान में सबसे बड़ा मुद्दा रोजगार और किसानों की समस्याएं रहे । भाजपा सरकार विगत 5 सालों में प्रदेश के युवाओं को न ही अपेक्षित रोजगार दे पायी और न ही किसानों की समस्याएं दूर कर पायीं। ऊपर से नोटबन्दी तथा जीएसटी के बिना पूर्व तैयारी के लागू किया जाने ने कोढ़ में खाज का काम किया। 2014 के लोकसभा और 2013 के राजस्थान विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अतिरंजित चुनावी वायदे किये, जैसे – काले धन की वापसी, प्रत्येक मतदाता के खाते में 15 लाख रूपये डालना, व्यापक रोजगार तथा हिन्दू धर्म से जुड़ा राम मन्दिर, धारा 370 व समान आचार संहिता सम्बन्धी वायदे। चूँकि ये वायदे पूरे नहीं हुए। इसलिए ये चुनावी जुमले बन गए । राहुल गाँधी ने राफेल मामले में 'चौकीदार ही चोर है' का नारा दिया और जनता के सामने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व उनकी टीम की भ्रष्टाचारी छवि पेश की । मोदी सरकार भी जीयो इन्स्टीट्यूट को एमिनेंट इन्स्टीट्यूट के दर्जे देने जैसी गलतियां कर बैठी (जबकि धरातल पर इस संस्थान का अस्तित्व ही नहीं था)। राजनीतिक दृष्टि से भाजपा की आन्तरिक प्रतिद्वन्द्विता भी पार्टी के लिए घातक रही। शायद इस प्रतिद्वन्द्विता और प्रदेश में नेतृत्व परिवर्तन की भाजपा की शीर्ष लेवल की सुगबुगाहट ने वसुन्धरा राजे को खुलकर खेलने से रोका और इसी वजह से राजे की टीम प्रदेश में एक के बाद एक करके हुई कर्मचारी हड़तालों को समाप्त नहीं करवा पायी। बजरी खनन पर कोर्ट की रोक ने भी प्रदेश में बेरोजगारी व बजरी की काला–बाजारी बढायी। इससे सरकारी स्तर पर भ्रष्टाचार के खिलाफ माहौल बना। अब भाजपा के सामने 2019 के लोकसभा चुनाव में बेहतर प्रदर्शन चुनौती हैं, वहीं कांग्रेस के सामने राजस्थान में साख बचाये रखने का दारोमदार है। देखते है कांग्रेस का जादूगर रेगिस्तान में कौनसा खेल दिखाता है। 11 दिसम्बर, 2017 को राहुल ग्राँधी ने कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी ली थी, ठीक एक साल बाद 11 दिसम्बर(2018)का दिन राहुल गाँधी के लिए दूसरी बार शुभ साबित हुआ। उनकी लीडरशिप में कांग्रेस की यह पहली बड़ी जीत थी। कांग्रेस ने राजस्थान ही नही, भाजपा से मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ भी छीन लिया। यदि राजस्थान में कांग्रेस पार्टी में सत्ता के दो ध्रुव (गहलोत व पायलेट) न होकर एकछत्र नेतृत्व होता, तो सफलता और भी चमकदार होती।

संदर्भ संदर्भ सूची

1. *ईसीआई/पीएन/66/2018 , डेटेड 06 अक्टूबर, 2018*
2. *ईसीआई/पीएन/66/2018, डेटेड 06 अक्टूबर, 2018.*
3. *राजस्थान पत्रिका , जयपुर, 21 नवम्बर, 2018.*
4. *उपर्युक्त।*
5. *किरण वर्मा, राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018 : मतदान शुरू, वसुंधरा और पायलट ने डाला वोट, राज एक्सप्रेस, दिसम्बर 7, 2018.*
6. *किरण वर्मा, उपर्युक्त।*
7. *दैनिक भास्कर कोटा, 29 सितम्बर 2018.*
8. *दैनिक भास्कर कोटा, 22 अक्टूबर 2018.*
9. *उपर्युक्त ।*
10. *उपर्युक्त ।*
11. *दैनिक भास्कर, कोटा, 7 दिसम्बर 2018.*
12. *दैनिक भास्कर, कोटा, 29 सितम्बर 2018.*
13. *विजय कुमार तिवारी, राजस्थान में लोकतंत्र की शोभा बढ़ा रहे हैं छोटे–छोटे दल, जीत पक्की नहीं पर जोरदार दावा, हिन्दी डॉट कॉम, साक्षी डॉट कॉम, 03 दिसम्बर 03, 2018.*
14. *दैनिक भास्कर, कोटा, 07 दिसम्बर 2018.*
15. *लक्ष्मीप्रसाद पंत, अहंकार राजस्थान को पसंद नहीं है, सरकारें ये क्यों भूल जाती हैं, दैनिक भास्कर , कोटा, 12 दिसम्बर 2018.*
16. *दैनिक भास्कर, कोटा, 13 अक्टूबर 2018 तथा राजस्थान पत्रिका, कोटा, 15 दिसम्बर 2018*
17. *विजय कुमार तिवारी, वही।*
18. *विक्की ननजप्पा, राजस्थान असेम्बली पोल्स : ओनली फाइव वॉन विद मोर दैन थर्टी परसेंट मार्जिन, डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट वन इण्डिया डॉट कॉम, जनवरी 29, 2019.*
19. *विक्की ननजप्पा, उपर्युक्त।*
20. *विजय कुमार तिवारी, वही।*
21. *विजय कुमार तिवारी, वही।*
22. *राजस्थान इलेक्शन रिजल्ट : कांग्रेस को मिला पूर्ण बहुमत, जानिए कहाँ कौन जीता, टाइम्स नाउ डॉट कॉम (हिन्दी), अपडेटेड – दिसम्बर 12, 2018.*
23. *7 दिसम्बर को होगा राजस्थान में चुनाव, जानिए मौजूदा विधानसभा की तस्वीर, लाइव हिन्दुस्तान डॉट कॉम, अक्टूबर 06, 2018.*
24. *राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018, 7 दिसम्बर को डाले जाएंगे वोट, 19 नवम्बर तक नामांकन की तारीख, डब्ल्यू डब्ल्यू डॉट न्यूजस्टेट डॉट कॉम, अपडेटेड – अक्टूबर 8, 2018*
25. *दैनिक भास्कर, कोटा 14 दिसम्बर, 2018 , राजस्थान पत्रिका, कोटा, 12 दिसम्बर, 2018 तथा दैनिक भास्कर, जयपुर, 1 फरवरी, 2019.*

26. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 12 दिसम्बर 2019 एवं बीजेपी लोसेज बिग वोट शेयर,बट नॉट ऑल टू कांग्रेस,दिसम्बर 11, 2018, एनडीटीवी डॉट कॉम।
27. राजस्थान इलेक्शन रिजल्ट अपडेट्सः कांग्रेस आउट्स बीजेपी, बट कैननॉट फॉर्म गवर्नमेंट ऑन आउन, सस्पेंस कन्टीन्यूअस, अपडेटस – दिसम्बर 12 2018, जयपुर, इण्डिया टूडे डॉट इन ।
28. दैनिक भास्कर, 12 दिसम्बर,2018.
29. दैनिक भास्कर, कोटा, 14 दिसम्बर,2018
30. दैनिक भास्कर, कोटा, 12 दिसम्बर 2018.
31. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 19 दिसम्बर 2018.
32. उपर्युक्त।
33. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 30 अक्टूबर 2018.
34. उपर्युक्त।
35. राष्ट्रदूत, जयपुर, 31 जनवरी 2019.
36. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 16 दिसम्बर 2018.
37. बीटीपी मेक्स इनरोड्स इन्टू राजस्थान पॉलिटिक्स, अपडेट न्यूज, दिसम्बर 13, 2018.
38. उपर्युक्त।
39. उपर्युक्त।
40. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 16 दिसम्बर 2018.
41. उपर्युक्त।
42. उपर्युक्त।
43. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 19 दिसम्बर 2018.
44. उपर्युक्त।
नोटः – किसी भी उम्मीदवार की जमानत जब्त न हो, इसके लिए उसे कुल पड़े वैद्य मतों का 1/6 भाग मिलना आवश्यक है।
45. उपर्युक्त।
46. द टाइम्स ऑफ इण्डिया, जयपुर, जनवरी 29, 2019.
47. उपर्युक्त।
48. उपर्युक्त।
49. राजस्थान : पोलिंग रिकोर्डेड इन रामगढ़ असेम्बली कॉन्स्टीट्वेन्सी बाई इलेक्शन ड्यूरिंग इनीशियल ऑवर्स, स्क्रॉल डॉट इन, अपडेट्स– 28 जनवरी, 2019.
50. हिन्दुस्तान टाइम्स, न्यू देल्ही, फेबुरेरी 01, 2019.
51. उपर्युक्त।
52. उपर्युक्त।
53. द इण्डियन एक्सप्रेस, जयपुर, फेबुरेरी 01, 2019.
54. दैनिक भास्कर, कोटा, 9 अक्टूबर, 2018.
55. उपर्युक्त।
56. उपर्युक्त।.
57. उपर्युक्त।
58. राजस्थान असेम्बली इलेक्शंस, 2018 : 259 बूथ्स टर्न 'पिंक' एक्रोस स्टेट, टाइम्स ऑफ इण्डिया डॉट कॉम, अपडेटेड – दिसम्बर 7, 2018.
59. दैनिक भास्कर, कोटा, 02 अगस्त, 2018.
60. उपर्युक्त।
61. क्या है VVPAT यानी इलेक्ट्रॉनिक्स वोटिंग मशीन और कागज़ की पर्ची, बीबीसी हिन्दी, बीबीसी डॉट कॉम, 01 अप्रेल, 2017 ।
62. उपर्युक्त।
63. विक्की ननजप्पा, वही।
64. दैनिक भास्कर, कोटा, 9 दिसम्बर 2018.
65. विक्की ननजप्पा, वही।
66. राजस्थान इलेक्शन रिजल्ट अपडेट : कांग्रेस आउट्स बीजेपी, बट कैननॉट फॉर्म गवर्नमेंट ऑन आउन, सस्पेंस कन्टीन्यूअस, अपडेट्स – दिसम्बर 12, 2018, जयपुर, इण्डिया टुडे डॉट इन।
67. दैनिक भास्कर, कोटा, 12 दिसम्बर, 2018.
68. उपर्युक्त।
69. राजस्थान चुनाव : महिलाओं का रंग फीका रहा, पिछली बार से भी कम पहुँचेंगी विधानसभा, इण्डिया टाइम्स डॉट कॉम, दिसम्बर 12, 2018
70. उपर्युक्त।
71. उपर्युक्त।
72. दैनिक भास्कर, जयपुर, 17 अक्टूबर, 2018.
73. उपर्युक्त।
74. दैनिक भास्कर, कोटा, 15 दिसम्बर, 2018.
75. दैनिक भास्कर, जयपुर– 15 दिसम्बर, 2018.
76. दैनिक भास्कर, कोटा,17 अक्टूबर, 2018
77. विजय कुमार तिवारी, वही।
78. दैनिक भास्कर, कोटा, 17 दिसम्बर 2018.
79. राजस्थान पत्रिका, कोटा 16 जनवरी, 2019.
80. कटारिया होंगे प्रोटेम स्पीकर, आठवीं बार बने हैं विधायक, दैनिक भास्कर, जनवरी 9, 2019, डब्ल्यू. डब्ल्यू.डब्ल्यू. डॉट कॉम भास्कर डॉट कॉम।
81. उपर्युक्त ।
82. दैनिक भास्कर, कोटा, 15 जनवरी 2019
83. उपर्युक्त।
84. उपर्युक्त।
85. उपर्युक्त।
86. उपर्युक्त।
87. उपर्युक्त।
88. राजस्थान पत्रिका, कोटा, 15 जनवरी, 2019
89. दैनिक भास्कर, कोटा, 14 जनवरी 2019
90. उपर्युक्त।
91. राजस्थान विधानसभा चुनाव 2018/कांग्रेस ने जारी किया घोषणा पत्र, रोजगार के लिए कम दर पर ऋण देने का किया वादा, हरिभूमि, दिल्ली, हरिभूमि डॉट कॉम, अपडेटेड –नवम्बर 29, 2018.
92. राजस्थान विधानसभा चुनाव–2018, उपर्युक्त व राजस्थान इलेक्शन–2018 : कांग्रेस का घोषणा पत्र, जागरण डॉट कॉम, 29 नवम्बर,2018.
93. राजस्थान विधानसभा चुनाव – 2018/भाजपा ने जारी किया अपना संकल्प पत्र, हरिभूमि, दिल्ली, हरिभूमि डॉट कॉम, नवम्बर 27, 2018.
94. दैनिक भास्कर, कोटा 12 दिसम्बर, 2018.
95. ऑल आइज़ ऑन 21 'हॉट सीट्स' ऑफ राजस्थान असेम्बली, इनाडू इण्डिया डॉट कॉम, नवम्बर 21, 2018.
96. दैनिक भास्कर, कोटा, 12 दिसम्बर, 2018.
97. राजस्थान चुनाव 2018ः टोंक में दिलचस्प मुकाबला, पायलट के सामने बीजेपी का इकलौता

मुस्लिम प्रत्याशी, नई दुनिया, एचटीटीपी:// नई दुनिया डॉट जागरण डॉट कॉम, 30 नवम्बर,2018

98. *उपर्युक्त।*
99. *उपर्युक्त।*
100. *उपर्युक्त।*
101. *दैनिक भास्कर, कोटा, 12 दिसम्बर, 2018.*
102. *उपर्युक्त।*
103. *ऑल आइज ऑन 21 'हॉट सीट्स' ऑफ राजस्थान असेम्बली, इनाडूइण्डिया डॉट कॉम नवम्बर 21, 2018.*
104. *राजस्थान की 21 हॉट सीट पर जानिए कौन हारा और कौन जीता, दैनिक भास्कर डॉट कॉम, दिसम्बर 11, 2018.*
105. *उपर्युक्त।*
106. *उपर्युक्त।*
107. *उपर्युक्त।*
108. *विधान सभा चुनाव में हार पर क्या बोले पीएम नरेन्द्र मोदी, बीबीसी डॉट कॉम, 11 दिसम्बर, 2018।*
109. *अनुज पंत, राजस्थान इलेक्शन रिजल्ट्स हाइलाइट्स : ''वी एक्सेप्ट प्यूपल्स मैन्डेट'' : पीएम मोदी, एचटीटीपी : //डब्ल्यू.डब्ल्यू. डब्ल्यू., एनडीटीवी डॉट कॉम, दिसम्बर 12, 2018.*